चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	12.9.25	4	1-3

• एचएयू ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

एचएयू की सरसों की उन्नत किस्म से अब एमपी के किसान भी ले सकेंगे अधिक पैदावारी : वीसी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। एचएयू ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है। वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। इससे खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

हिसार | एचएयू कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

आरएच 1975 और 725 किस्मों की विशेषताएं, तेल मात्रा करीब 39.5%

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है, इसलिए इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी होती है व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। दानों का आकार बड़ा और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12-9.25	8	3-8

हकृवि की सरसों की उन्नत किस्में किसानों की बढ़ाएंगी पैदावार

- हकृवि ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच के साथ किया समझौता
- आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज हकृवि उपलब्ध करवाएगी एमकेडी सीड्स को

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित किए गए उन्नत किस्मों के बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच (मध्यप्रदेश) के साथ समझौता किया है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर ने व जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवाकर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। इस अवसर पर कुलसचिव डा.पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा.एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा.रमेश कुमार, डा.अनिल कुमार, डा.विनोद मलिक, डा.रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डा.योगेश जिंदल, डा.रेणू मुंजाल व डा.जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी

किस्मों की ये हैं विशेषताएं

सरसों की आरएच 1975 किस्म : 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। डा. राजबीर ने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है।

आरएच 1975 किस्म : हरियाणा पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है, इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा।

सरसों की आरएच-725 किस्म, बड़े होंगे दाने

इसकी फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	12-9-25	5	1-3

हकृवि की सरसों की उन्नत किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएगी पैदावार : प्रो. काम्बोज

हकृवि ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

हिसार, 11 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की और से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	12.9.25	2	3-5

एचएयू ने मध्य प्रदेश की कंपनी से किया समझौता

हकृवि में विकसित सरसों की उन्नत किस्मों के बीज किसानों को दिए जाएंगे

माई सिटी रिपोर्टर

हस्ताक्षर युक्त समझौता पत्र दिखाते प्रो. बीआर कांबोज और कंपनी अधिकारी। स्रोत : संस्थान

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से विकसित की गईं सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को भी उपलब्ध होंगी। एचएयू ने मध्यप्रदेश के नीमच की स्थित कंपनी माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। वीसी की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की तरफ से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने और कंपनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन और आरएच-725 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है।

सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किस्म हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	12.9.25	9	3-8

हकृवि की उन्नत सरसों की किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएगी पैदावार: प्रो. काम्बोज

हकृवि ने माई किसान एग्रो नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

हरिभूमि न्यूज ▸▸। हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

इन किस्मों की विशेषताएं

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिन्हित की गई है, इसलिए इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग न्यूज	11.9.2025	--	--

हकृवि ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

हकृवि की सरसों की उन्नत किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएंगी पैदावार

जगमार्ग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 क्विंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिन्हित की गई है, इसलिए इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणु मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार; लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	11.9.2025	--	--

हकृवि ने माई किसान एग्रो नीमच के साथ समझौता पर किए साइन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीड्स) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की और से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है।